महाकवि ने अपने काव्य में छोटे और गेय छन्दों का बहुलता से प्रयोग किया है। उपजाति उनका प्रिय छन्द है जिसका प्रयोग रघुवंश और कुमारसम्भव के विभिन्न सर्गों में किया गया है। इसके अतिरिक्त अनुष्टुप्, वंशस्थ, रथोद्धता, वियोगिनी, द्रुतविलम्बित, मालिनी, मन्दाक्रान्ता, वसन्ततिलका, हरिणी आदि छन्दों का प्रयोग भी मिलता है।

बोध प्रश्न 1

1. निम्नलिखित में से कालिदास रचित महाकाव्य है–

   (अ) बुद्धचरित (ब) रघुवंश

   (स) शिशुपालवध (द) नैषधीयचरित

2. महाकवि कालिदास का प्रिय अलंकार है–

   (अ) रूपक (ब) उत्प्रेक्षा

   (स) श्लेष (द) उपमा

3. नीचे दिये गये कथनों में से सत्य (√) तथा असत्य (×) कथन का चयन कीजिये।

   i) रति-विलाप का प्रसंग कुमारसम्भव महाकाव्य में है– ( )

   ii) कालिदास का प्रिय छन्द मालिनी है– ( )

   iii) कालिदास का समय प्रथम शताब्दी ई॰ पू॰ माना जा सकता है– ( )

4. लघुत्रयी के अन्तर्गत कौन-कौन सी रचनायें हैं?

   ....

   ....

अभ्यास प्रश्न 1

1. कालिदास की कृतियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कीजिये।

3.3 अश्वघोष

अश्वघोष महान् धर्मप्रचारक, दार्शनिक तथा उच्चकोटि के विद्वान् थे। यहाँ आप अश्वघोष के जीवन-वृत्त, कर्तृत्व और शैलीगत वैशिष्ट्य का अध्ययन करेंगे।

3.3.1 जीवन-वृत्त

महाकवि अश्वघोष की रचनाओं से यह ज्ञात होता है कि वह साकेत अर्थात् अयोध्या के निवासी थे। उनकी माता का नाम सुवर्णाक्षी था। ये बौद्ध भिक्षु तथा आचार्य थे जिन्हें भदन्त महाकवि तथा महावादी भी कहा जाता था। ये जन्मना ब्राह्मण थे बाद में बौद्ध धर्म में दीक्षित होकर उन्होंने सुदूर प्रदेशों की यात्रा की तथा बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार किया।

अश्वघोष का काल कुषाण शासक कनिष्क के समकालीन था। चीनी परम्परा में अश्वघोष को कनिष्क का आध्यात्मिक उपदेशक तथा चरक को उनका राजवैद्य कहा गया है। बुद्धचरित तथा सौन्दरानन्द में अश्वघोष ने शुद्धोदन के व्यक्तित्व तथा शासन-व्यवस्था के वर्णन में कनिष्क के व्यक्तित्व तथ शासन-व्यवस्था की झाँकी दी है। शारिपुत्रप्रकरण की पाण्डुलिपि से भी यह सिद्ध होता है कि अश्वघोष कनिष्क के समकालीन थे। भारतीय विद्वान् कनिष्क का समय प्रथम शताब्दी ई॰ पू॰ मानते हैं। अतः इस आधार पर अश्वघोष का काल भी प्रथम शताब्दी ई॰ पू॰ माना जा सकता है।

3.3.2 कर्तृत्व

अश्वघोष के नाम से अनेक रचनायें प्रसिद्ध हैं जिनमें बुद्धचरित, सौन्दरानन्द, शारिपुत्र-प्रकरण, सूत्रालंकार, राष्ट्रपाल, वज्रसूची आदि रचनायें परिगणित हैं। इनमें बुद्धचरित 28 सर्गों का एक महाकाव्य है जिसमें सिद्धार्थ-जन्म, अभिनिष्क्रमण, बुद्धत्व प्राप्ति, धर्मचक्रप्रवर्तन, महापरिनिर्वाण, स्तूप-निर्माण आदि की कथा निबद्ध है। सौन्दरानन्द के 18 सर्गों में नन्द और सुन्दरी की कथा निबद्ध है जिनमें गौतम बुद्ध का जन्म, बुद्धत्व-प्राप्ति, नन्द-सुन्दरी विवाह, बुद्ध का नन्द को दीक्षा देना, स्वर्ग-दर्शन, चार आर्यसत्य, नन्द को अमृतत्व प्राप्ति आदि विषय वर्णित हैं।

3.3.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

अश्वघोष वैदर्भी रीति के कवि हैं। उनकी शैली में प्रसाद और माधुर्य गुण का बाहुल्य है। शुद्धोदन की आत्मशुद्धि वर्णन, यशोधरा की चिन्ता, नन्द-सुन्दरी के चकवा-चकवी के तुल्य अतुलनीय प्रेम जैसे अनेक प्रसंगों में भावों की सुन्दर अभिव्यक्ति है। उन्होंने श्रृंगार के दोनों पक्षों का मनोरम चित्रण किया है। नन्द-सुन्दरी के अनुराग-वर्णन में जहाँ सम्भोग श्रृंगार अपने चरम में पहुँच जाता है तो वहीं सुन्दरी विलाप के प्रसंग में विप्रलम्भ श्रृंगार की छटा देखते ही बनती है। इस प्रकार अश्वघोष ने अपने काव्यों में श्रृंगार, करुण, हास्य, अद्भुत आदि रसों का सुन्दर समन्वय किया है। उनके काव्यों में अनुप्रास, यमक रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, वक्रोक्ति आदि अलंकारों का प्रयोग मिलता है। अश्वघोष कपिलवस्तु की समृद्धि को मालोपमा का आश्रय लेकर वर्णित करते हैं–

सन्निधानमिवार्थानामाधानमिव तेजसाम्।
निकेतमिव विद्यानां सङ्केतमिव सम्पदाम्।।

(सौन्दरानन्द–1/53)

अश्वघोष का प्रिय छन्द अनुष्टुप् और उपजाति है। उनके महाकाव्यों के अधिकांश सर्गों में उपजाति छन्द का प्रयोग हुआ है। सर्गान्त के श्लोकों में वंशस्थ, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडित आदि छन्दों का प्रयोग हुआ है।

3.4 भारवि

किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के प्रणेता के रूप में भारवि का संस्कृत साहित्य में मूर्धन्य स्थान है। यहाँ हम भारवि के जीवन-वृत्त, कर्तृत्व एवं शैलीगत विशेषताओं का अध्ययन करेंगे।

3.4.1 जीवन-वृत्त

कालिदासादि महाकवियों के समान भारवि का जीवन-वृत्त भी अप्राप्त है। 'अविन्तसुन्दरीकथा' के अनुसार भारवि, दण्डी के प्रपितामह थे तथा उनका वास्तविक नाम 'दामोदर' था। भारवि के पिता का नाम 'नारायणस्वामी' था। दामोदर ने भारवि के माध्यम से राजा विष्णुवर्द्धन से सम्पर्क किया जहाँ भारवि को 'महाशैव' कहा गया। प्रायः सभी विद्वान् भारवि को दक्षिणात्य मानते हैं।

भारवि का काल निर्धारण बहिरंग प्रमाणों पर ही आधारित है। ऐहोल शिलालेख में रविकीर्ति ने स्वयं को कालिदास और भारवि की कीर्ति का आश्रय लेने वाला कहा है। अतः स्पष्ट है कि भारवि उस काल तक पर्याप्त प्रसिद्ध हो चुके थे। उन्होंने चालुक्यवंशी राजा विष्णुवर्द्धन के काल में 'किरातार्जुनीय' की रचना की थी। काशिकाकार वामन-जयादित्य ने अपनी